Reflective-teaching. चिन्तन-शिक्षण

Reflective Level of Teaching. (चिन्तन-स्तर पर शिक्षण)

शिक्षण कक्षा में विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने की एक व्यवस्था है। जिसका उद्देश्य छात्रों को सीखने के लिये प्रेरित करना है। शिक्षण के उद्देश्य अत्यन्त स्पष्ट होने चाहिये तभी शिक्षण प्रभावशाली साधनों का प्रयोग कर इसे अधिक शक्तिशाली बना सकता है। शिक्षण प्रक्रिया के अन्तर्गत 'पाठ्यवस्तु' एक महत्वपूर्ण उपागम है, जिसके बिना शिक्षण नहीं हो सकता। "एक ही पाठ्यवस्तु को शिक्षण उपागम परिस्थितियाँ विचारहीन से लेकर विचारपूर्ण स्थिति तक ले जा सकती है।" अतः शिक्षण की प्रक्रिया की परिस्थितियों को हम एक सतत क्रम पर [redacted] क्रियाओं की अवस्थाओं या स्तरों में विभाजित कर सकते है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि शिक्षण की पूर्ण प्रक्रिया को निम्न-लिखित तीन स्तरों में विभाजित किया जा सकता है।

शिक्षण के स्तर

- स्मृति स्तर (Memory Level)
- बोध स्तर (Understanding Level)
- चिन्तन स्तर (Reflective Level)

स्मृति स्तर ⟶ बोध स्तर ⟶ चिन्तन स्तर

प्रारम्भ — शिक्षण प्रक्रिया — अन्त

Reflective-teaching - (चिन्तन-शिक्षण)

चिन्तन मानव के विकास का महत्वपूर्ण पद है। इस स्तर पर शिक्षक अपने छात्रों में चिन्तन, तर्क तथा कल्पना शक्ति को बढ़ाता है ताकि बाद में ये छात्र इन उपागमों के माध्यम से अपनी समस्याओं का समाधान कर सकें। इस स्तर पर शिक्षण में स्मृति तथा बोध दोनों स्तरों का शिक्षण निहित होता है। इसके अभाव में चिन्तन स्तर का शिक्षण सफल नहीं हो सकता।

चिन्तन-स्तर पर शिक्षण समस्या-केन्द्रित होती है। शिक्षक छात्रों के सामने कोई सम्बन्धित ज्वलन्त समस्या प्रस्तुत करता है जिस पर छात्र सक्रिय व अभिप्रेरित होकर स्वयं चिन्तन प्रारम्भ कर देते हैं। यह चिन्तन आलोचनात्मक दृष्टिकोण वाला मौलिक चिन्तन होता है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्रों के व्यवहार को भी निर्धारित करने के अवसर देते हुये शिक्षक का कार्य है उनमें सृजनात्मक क्षमताओं का विकास करना। यह शिक्षण का सर्वोच्च स्तर है और पूर्णतया विचारवान है। इस प्रकार के शिक्षण में छात्र अपनी अभिव्यक्ति, धारणा, विचार, मान्यता तथा ज्ञान के अनुसार समस्या-समाधान के लिये विचार तथा तर्क करते हुये नवीन ज्ञान की खोज करते हैं। यह एक उत्पादक स्थिति है जिसमें निर्णय, खोज, शोध व सृजन को अन्त किया जाता है।

इस स्तर पर छात्र स्वयं रुचि लेकर, स्वेच्छा से चिन्तन, मनन, तर्क व कल्पना करते हुये समस्या का समाधान खोजते हैं और स्वयं को अधिक आत्म विश्वास वाला, क्रियाशील तथा सक्रिय छात्र बनाते हैं। इस स्तर पर शिक्षणार्थ, शिक्षकों को योग्य, अनुभवी, विषय तथा क्रिया विशेषज्ञ तथा प्रभावशाली होना चाहिये।

इस स्तर पर शिक्षण हेतु हण्ट महोदय का शिक्षण प्रतिमान के पक्ष काफी प्रचलित है, जो इस प्रकार है —

शिक्षण प्रतिमान-पक्ष

- उद्देश्य (focus)
- संरचना (syntax)
- सामाजिक प्रणाली (social system)
- मूल्यांकन प्रणाली (support system)

(1) उद्देश्य (focus) –

(i) छात्रों में मौलिक व स्वतन्त्र चिन्तन शक्ति का विकास करना।

(ii) छात्रों में समस्या-समाधान हेतु आलोचनात्मक तथा सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास करना।

(ii) संरचना (syntax) -

यह समस्या की प्रकृति पर आधारित रहती है। यह व्यक्तिगत तथा सामाजिक दोनों तरह की हो सकती है। इसके चार सोपान (step) होते हैं —

(i) छात्रों के सामने समस्या - परिस्थिति उत्पन्न करना।
(ii) छात्रों द्वारा उपकल्पना का निर्माण करना।
(iii) उपकल्पना पुष्टि के लिये सूझ, चिन्तन, मनन का प्रयोग करना।
(iv) उपकल्पना का परीक्षण तथा समस्या-समाधानकरना।

(iii) सामाजिक प्रणाली (social system) -

(i) कक्षा का वातावरण पूर्णतः से खुला व स्वतन्त्र होता है।
(ii) छात्र क्रियाशील और स्वप्रेरित होते हैं।
(iii) छात्रों के समाजीकरण का दृढ़ आधार है।
(iv) सहयोग, सामाजिक संवेदनशीलता तथा सहानुभूति का वातावरण रहता है।

(iv) मूल्यांकन प्रणाली (support system) -

(i) ~~मूल्यांकन~~ निदानात्मक मूल्यांकन अधिक उपयोगी है।
(ii) अभिरुचि, समस्या-समाधान, सृजनात्मक आदि के परीक्षण उपादेय हैं।

चिन्तन-शिक्षण के सुझाव —

(1) चिन्तन-शिक्षण के पूर्व स्मृति तथा बोध-स्तर का ज्ञान अवश्य होना चाहिये।
(2) प्रत्येक सम्बन्धित सोपान (step) का अनुसरण किया जाना चाहिये।
(3) छात्रों का आकांक्षा-स्तर उच्च होना चाहिये।
(4) उनमें सहानुभूति, प्रेम तथा संवेदनशीलता होनी चाहिये।
(5) समस्या की अनुभूति होनी चाहिये।
(6) ज्ञानात्मक विकास की ओर ध्यान दिया जाना चाहिये।
(7) छात्रों को अधिक से अधिक मौलिक तथा सृजनात्मक चिन्तन के लिये अवसर प्रदान किये जाने चाहिये।
(8) शिक्षण का वातावरण प्रजातान्त्रिक बनाने का प्रयास करना चाहिये।
(9) छात्रों को अधिक से अधिक सही चिन्तन के लिये प्रेरित किया जाना चाहिये।